सीखें सिखाएं
खेल खेल में

सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ
जुड़े स्ट्रीट एजुकेटर्स की हैण्डबुक

चेतना
(चाइल्डहुड ऐन्हान्समेंट थ्रू ट्रेनिंग एण्ड एक्शन)
40/22, मनोहर कुंज, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं - 011-41644470, 41644471

आलेख :
पांखुरी माथुर

संपादक :
संजय गुप्ता

सह संपादक :
सुमित कुमार

चित्रांकन :
पांखुरी माथुर

डिजायन एवं प्रॉडक्शन :
लतीफ किरमानी (09810985063)

आर्थिक सहयोग :
प्लान इंडिया

© जनसाधारण के नाम

हम आभारी हैं:

प्रोफेसर अंजली गाँधी के, जिन्होंने इस हैण्डबुक को बनाने में हमारा मार्गदर्शन किया।
हरीश, पल्लवी और चेतना के अन्य स्ट्रीट एजुकेटर्स जिन्होंने हमें सहयोग दिया।
उन सभी बच्चों के जिन्होंने इस हैण्डबुक के कार्यक्रमों को बनाने मे सहभागिता दी ।

भूमिका

'सीखे सिखाएं खेल खेल में' उन संस्थाओं के लिए एक हैण्डबुक है जो सड़क व कामकाजी बच्चों के साथ उनके अधिकारों के लिए काम कर रही हैं। इन संस्थाओं के कार्यकर्ता बच्चों के साथ सीधा सम्पर्क बनाते हैं और उन्हें अपने कार्यक्रमों के साथ जोड़ते हैं।

इन बच्चों की ख़ास ज़रुरतों का ध्यान रखने के लिये, इन के साथ घुलने-मिलने व इन्हें शिक्षा की तरफ आकर्षित करने के लिये ज़रूरी है कि हम अपने कार्यक्रमों को आकर्षक, रचनात्मक और मनोरंजक बनाएं। ऐसा करने से ही हम बच्चों का ध्यान अपने कार्यक्रमों की ओर आकर्षित कर पाएंगे और कार्यक्रमों में बच्चों की भागीदारी बढ़ा पाएँगे।

देखा गया है कि अकसर ये कार्यकर्ता रचनात्मक और मनोरंजक कार्यक्रमों में अपनी निपुणता बढ़ाने के लिये ट्रेनिंग या सहायता का अभाव महसूस करते हैं। यह हैण्डबुक इसी कमी को पूरा करने का एक छोटा-सा प्रयास है। इस हैण्डबुक में कुछ रचनात्मक कार्यक्रमों को आसानी से प्रयोग मे लाने के तरीके दिये गये हैं।

इस हैण्डबुक को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा गया है। पहला भाग, 'खेल खेल में सिखाओ', जो एजुकेटर्स को बच्चों के साथ जुड़ने का अवसर देता है। खेलों की विशेषता यह है कि ये बच्चों में परस्पर घुलने मिलने एवं मित्रवत् व्यवहार को बढ़ावा में देने में सहायता करते हैं, साथ ही साथ उनका ज्ञानवर्धन भी करते हैं

दूसरा भाग 'कहानियाँ व इन्हें सुनाने के विभिन्न माध्यम' है, जिसमें कठपुतली , नाटक, चित्रों जैसे माध्यमों की चर्चा की गई है। खेल कूद व अन्य माध्यमों द्वारा बच्चों तक अपनी बात पहुचाने में आसानी होती है। बच्चे इन कार्यक्रमों मे रुचि से भाग लेते हैं।

इनमें से कुछ कार्यक्रम आप सभी बच्चों के साथ प्रयोग करते रहे होंगे और कई कार्यक्रम नए होंगे। इस हैण्डबुक को बनाने में हमने सड़क व कामकाजी बच्चों और उनसे जुड़े स्ट्रीट एजुकेटर्स की मदद ली और उनके अनुभवों से सीख लेने का प्रयास किया। हमें खुशी होगी अगर आप इस सिलसिले मे और कार्यक्रम जोड़ सकें और हमें उम्मीद है कि इन कार्यक्रमों द्वारा बच्चों के साथ आपके रोज़ाना के काम में मदद मिलेगी।

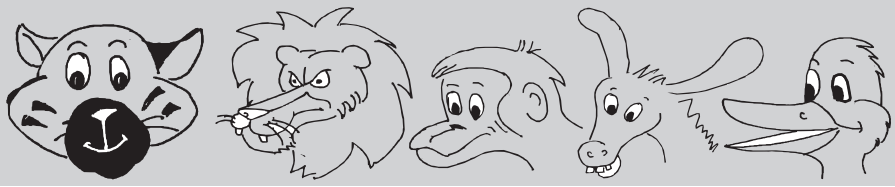

इस हैण्डबुक का उद्देश्य है

- एजुकेटर्स को बच्चों के साथ घुलने–मिलने और उन्हें शिक्षा की ओर आकर्षित करने के विभिन्न तरीकों से परिचित कराना।
- एजुकेटर्स को खेल कूद व मनोरंजन द्वारा शिक्षा प्रदान करने के माध्यमों से अवगत कराना।
- बच्चों में आत्मसम्मान, रचनात्मकता, अपनी बात खुलकर कहने और सुनने की क्षमता, जैसी खूबियों को बढ़ावा देने के लिये वातावरण तैयार करने के लिए एजुकेटर्स की सोच विकसित करना।

इस हैण्डबुक में है :

- कुछ अभ्यास
- एजुकेटर्स के लिये नोट्स
- जमीनी स्तर के अनुभव
- पठन सामग्री

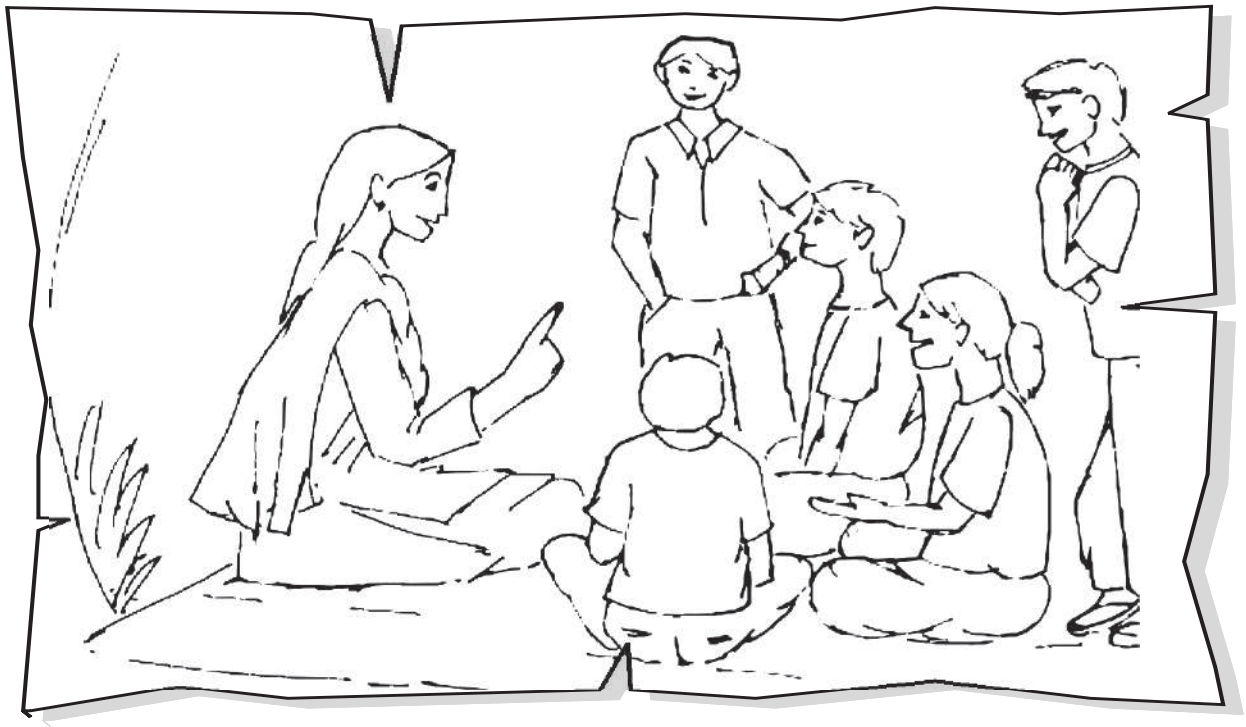

भाग – 1

खेल खेल में सिखाओ

इन खेलों का उद्देश्य है –

- ☞ एजुकेटर और बच्चों को साथ में घुलने मिलने का अवसर देना।
- ☞ बच्चों का पढ़ाई की तरफ रुझान बनाए रखना और उनके ध्यान को केंद्रित करने का माहौल तैयार करना।
- ☞ बच्चों के सीखने के लिये खुशनुमा माहौल बनाना।
- ☞ बच्चों और एजुकेट्र्स को एक –दूसरे के बारे में और जानने का अवसर देना।

इन खेलों की विशेषता है

- ☞ ये खेल, बालसमूह के सदस्यों को आपस में जोड़ने में मदद करते हैं।
- ☞ ये खेल बच्चों को लोगों के सामने खुल कर अपनी बात रखने के डर को हटाने में मदद करते हैं। बच्चों की हीनभावना दूर करते हैं।
- ☞ इन खेलों में कोई हार जीत नहीं होती अपितु बच्चों में परस्पर स्वस्थ प्रतियोगिता होती है।
- ☞ इन खेलों में कोई एक दूसरे के बारे में अपने मुकाबले अच्छी या बुरी राय नहीं बनाता इसलिए ये खेल बच्चों को मानसिक रूप से चोट नहीं पहुंचाते।
- ☞ ये खेल शिक्षा के साथ–साथ बच्चों को मनोरंजन के अवसर भी प्रदान करते हैं।

एजुकेटर नोट

- ☞ एजुकेटर ये खुद निर्धारित कर सकते हैं कि खेल को केवल मनोरंजन के लिए प्रयोग करना है या खेल के बाद उस खेल के बारे में बातचीत कर के उस अनुभव से बच्चों को कुछ सीख भी देनी हैं।

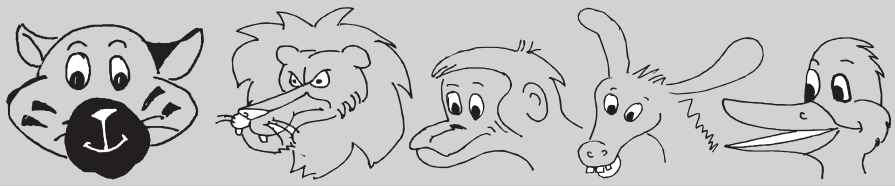

खेल संख्या 1

कितने भाई कितने

- ☺ सभी बच्चों को एक गोले में खड़ा होने के लिये कहिए ।
- ☺ उन सबसे गोले मे दाएं या बाएं चलने के लिये कहिये।
- ☺ आपको कहना है – ''कितने भाई कितने ''।
- ☺ जवाब में बच्चे कहेंगे – ''आप बोलो जितने''।
- ☺ इसके जवाब में आप कोई भी संख्या बोलिए जो बच्चों की कुल संख्या से अधिक ना हो।
- ☺ बच्चों को तुरंत समूह बनाने हैं। हर समूह में कही गई संख्या के बच्चे होने चाहिये।

ध्यान रहे –

☞ इस खेल में किसी भी बच्चे को बाहर न निकालें। जो समूह ना बना पाएं उन्हें भी दोबारा खेलने को कहें।

इस खेल से बच्चों को अंकों का ज्ञान होता है और समूह की भावना आती है।

खेल संख्या 2

मेरा साथी कौन

- ☺ जितने बच्चे हैं उतनी पर्चियाँ बनाएँ । कुछ जानवरों का चित्र जैसे दो-दो पर्चियों पर बनाएँ ।
- ☺ (जैसे- शेर, मुर्गा, कुत्ता, बिल्ली, गधा, मोर)
- ☺ इन पर्चियों को मोड़ कर मिला दीजिए और हर बच्चे से एक- एक पर्ची उठाने को कहिये।
- ☺ सभी बच्चों से अपनी पर्ची पर बने जानवर की आवाज निकालने को कहें। उन्हे उस दूसरे बच्चे को पहचानना है जो उनके जैसी आवाज निकाल रहा है।

ध्यान रहे –

- ☞ उन ही जानवरों को चुने जिनकी आवाज से बच्चे परिचित हों।
  या,
- ☞ खेल शुरू करने से पहले बच्चों को सभी जानवरों की आवाजों से परिचित कराएं।

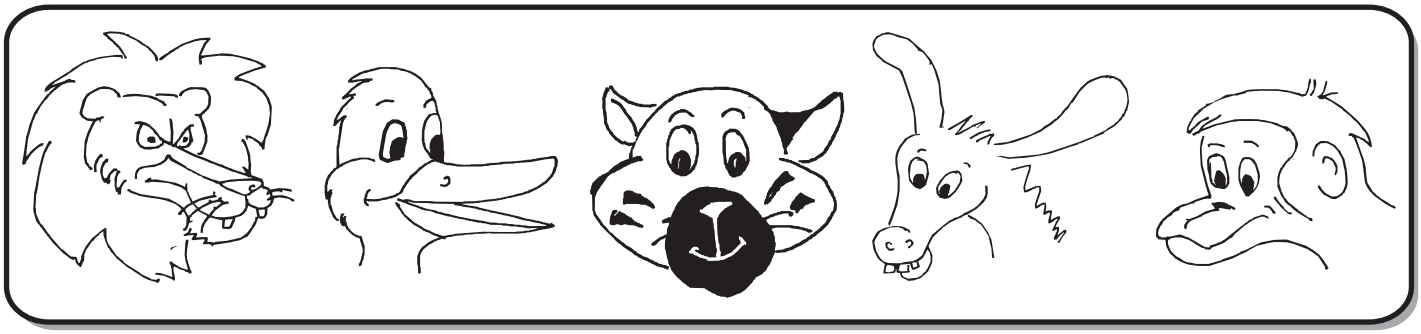

इस खेल के द्वारा बच्चों को आपस में घुलने - मिलने का मौका मिलता है और उनकी हिचकिचाहट दूर होती है।

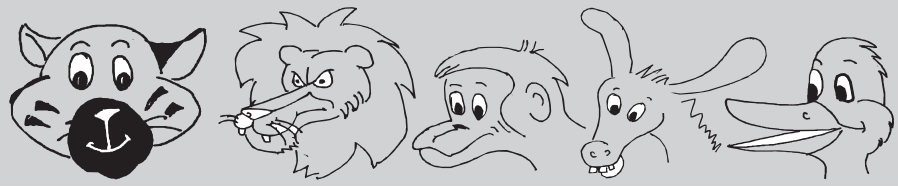

खेल संख्या 3

टिप्पी–टिप्पी–टाप

- ☺ सब बच्चों को साथ में खड़ा होने को कहें।
- ☺ आपको कहना है ''टिप्पी- टिप्पी -टाप''
- ☺ बच्चे इसके जवाब मे कहेंगे ''कौन सा रंग चाहिये ?''
- ☺ इसके जवाब मे आपको किसी भी ऐसे रंग का नाम लेना है जो बच्चों के कपड़ों या आस-पास की वस्तुओं में उपलब्ध हों। (जैसे- नीला, पीला, हरा)।
- ☺ सारे बच्चों को नाम लिये गए रंग की वस्तु को छूने के लिये भागना है।
- ☺ जैसे ही ज्यादातर बच्चे उस वस्तु को छू लें, दूसरे रंग का नाम लीजिए।

ध्यान रहे –

- ☞ सभी बच्चों को समान रूप से भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें।
- ☞ भागते समय बच्चों के लिये पर्याप्त जगह हो और उनके गिरने का खतरा ना हो।

इस खेल के द्वारा बच्चों में रंगों की पहचान के साथ-साथ उत्साहवर्द्धन किया जा सकता है।

खेल संख्या 4

अदृश्य गेंद

- ☺ बच्चों को एक गोले में एक दूसरे से एक हाथ की दूरी पर खड़ा होने के लिए कहिए।
- ☺ बच्चों को समझाएं कि यह खेल बिना बोले खेला जाता है।
- ☺ बच्चों को समझाइये कि आपके पास एक दृश्य गेंद है जिसे आप बच्चों को देंगें और वे इस गेंद को एक दूसरे की तरफ गोले में खड़े-खड़े फेंकेंगे।
- ☺ खेल शुरू करने के लिए आप एक बच्चे की तरफ अदृश्य गेंद फेंकियें।
- ☺ अगर वह बच्चा खेल समझ गया है तो गेंद पकड़ेगा और किसी और बच्चे की ओर फेंकेगा।

यह खेल बच्चों को ना बोले जानी वाली भाषा का अनुभव कराता है।

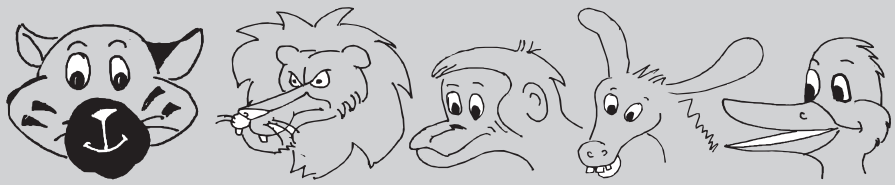

खेल संख्या 5

हां–ना वाले पत्थर

- ☺ बच्चों को दो –दो के जोड़े मे बांट दें।
- ☺ खेल शुरू करने के लिये हर बच्चे को पांच छोटे पत्थर दें।
- ☺ बच्चे अपने–अपने जोड़ीदार से कोई भी सवाल पूछेगें और पूछे गए सवालों का जवाब देंगे।
- ☺ किसी भी सवाल के जवाब में किसी को भी हां या ना बोलना मना है। यानी सवाल का जवाब हां या ना में नहीं होना चाहिए।
- ☺ जो भी बच्चा अपने जोड़ीदार से हां या ना बुलवाने में कामयाब हो जाता है वह अपना एक पत्थर अपने जोड़ीदार को दे देता है।
- ☺ जो भी अपने पांचों पत्थर सबसे पहले खत्म करता हैं वह जीत जाता है।

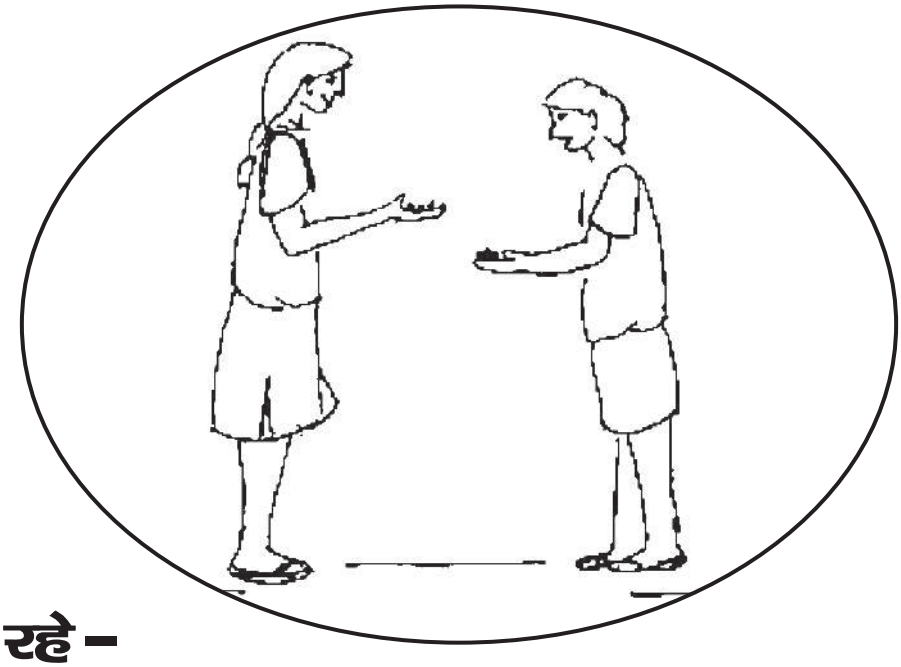

ध्यान रहे –

☞ बच्चों की मनोस्थिति को ध्यान रखते हुए आप पत्थरों की संख्या कम या ज्यादा कर सकते हैं।

इस खेल में बच्चे सवालों का जवाब देने के नए तरीके ढूंढ़ते हैं जिस से उनकी रचनात्मकता का विकास होता है।

खेल संख्या 6

राजा ने कहा

- ☺ सब बच्चों को गोले में खड़ा होने के लिए कहिए।
- ☺ बच्चों को बताएं कि वे आपके निर्देशों को ध्यान से सुनें।
- ☺ बच्चों से कुछ करने को कहिये, जैसे- "अपने पैर छुओ"
- ☺ बच्चे आपका निर्देश तभी मानेंगे जब उनसे कहा जाये "राजा ने कहा अपने पैर छुओ।"
- ☺ अगर कोई बच्चा गलती करता है तो फिर वह आगे का खेल खिलायेगा।

इस खेल से बच्चों में ध्यानाकर्षण क्षमता का विकास होता है।

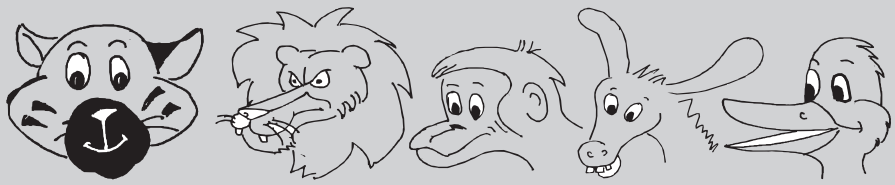

खेल संख्या 7

मेरा नम्बर कब आयेगा

- ☺ 0 से 9 तक के नम्बरों की पर्चियों के दो सेट बनाइये।
- ☺ बच्चों को दो समूहों मे बाँट दीजिये।
- ☺ दोनों समूहों में एक – एक सेट पर्चियाँ बाँट दीजिये।
- ☺ हर बच्चे के पास एक या अधिक पर्चियाँ हो सकती हैं।
- ☺ अलग अलग अंकों से बना एक नम्बर बोलिये – जैसे 469।
- ☺ दोनों समूहों में से 4, 6 और 9 नम्बर की पर्ची वाले बच्चे भागकर सामने आयेंगे और लाइन मे खड़े होकर अपनी पर्चियाँ दिखाएंगे जिससे कि वे 469 बनाएँ।
- ☺ जो टीम पहले नम्बर बनाएगी उसे एक अंक मिलेगा।
- ☺ ज्यादा अंक पाने वाला समूह जीतेगा।

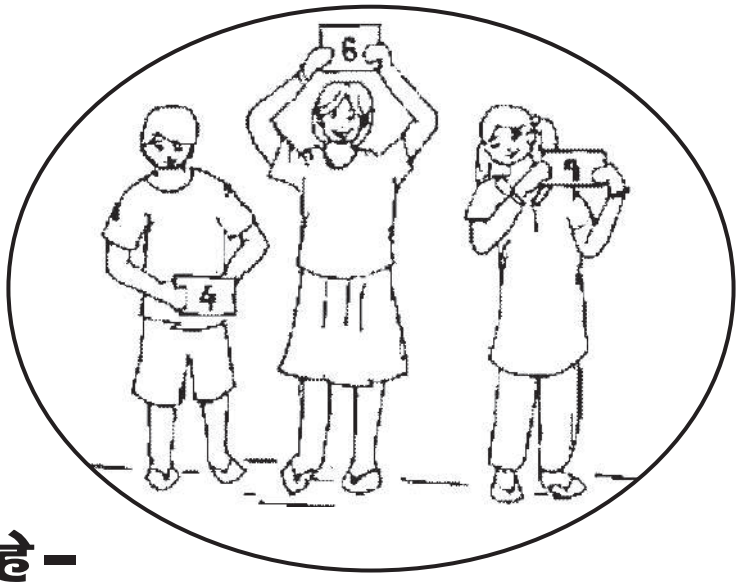

ध्यान रहे –

- ☞ यह खेल अधिकतम 20 बच्चों के साथ खेला जा सकता है।
- ☞ खेल को और भी मज़ेदार बनाने के लिये बच्चों को आसान सवाल (जैसे 4+2) दिये जा सकते हैं। इन सवालों के जवाब वाली संख्या बच्चे अपनी पर्चियों द्वारा दिखायेंगे।

इस खेल के द्वारा बच्चों को अंकों एवं गणित की मूलभूत जानकारी मिलती है साथ ही साथ उनमें सामूहिक भावना का विकास होता है।

खेल संख्या 8

कौन गायब है?

- ☺ सब बच्चों को एक गोले में बाहर की ओर मुंह और आंखें बन्द कर के खड़ा होने को कहिए। सभी एक दूसरे से एक हाथ की दूरी पर रहें।
- ☺ एक बच्चे को उसकी जगह से हटाकर गोले में कहीं और खड़ा कीजिये। ताकि उसकी जगह किसी और बच्चे से बदल जाए।(ध्यान रहे की उसकी आँखें बन्द रहें)
- ☺ ऐसा तब तक करें जब तक किसी को ये मालूम न हो कि उसके बगल में कौन खड़ा है।
- ☺ एक बच्चे को गोले के बीच में लाकर नीचे बैठने के लिये कहिये। उसे पूरी तरह से कपड़े से ढंक दीजिये ताकि कोई उसे न देख पाए।
- ☺ फिर सब बच्चों से घूमकर ये पता लगाने को कहिये कि कौन बच्चा ग़ायब है।

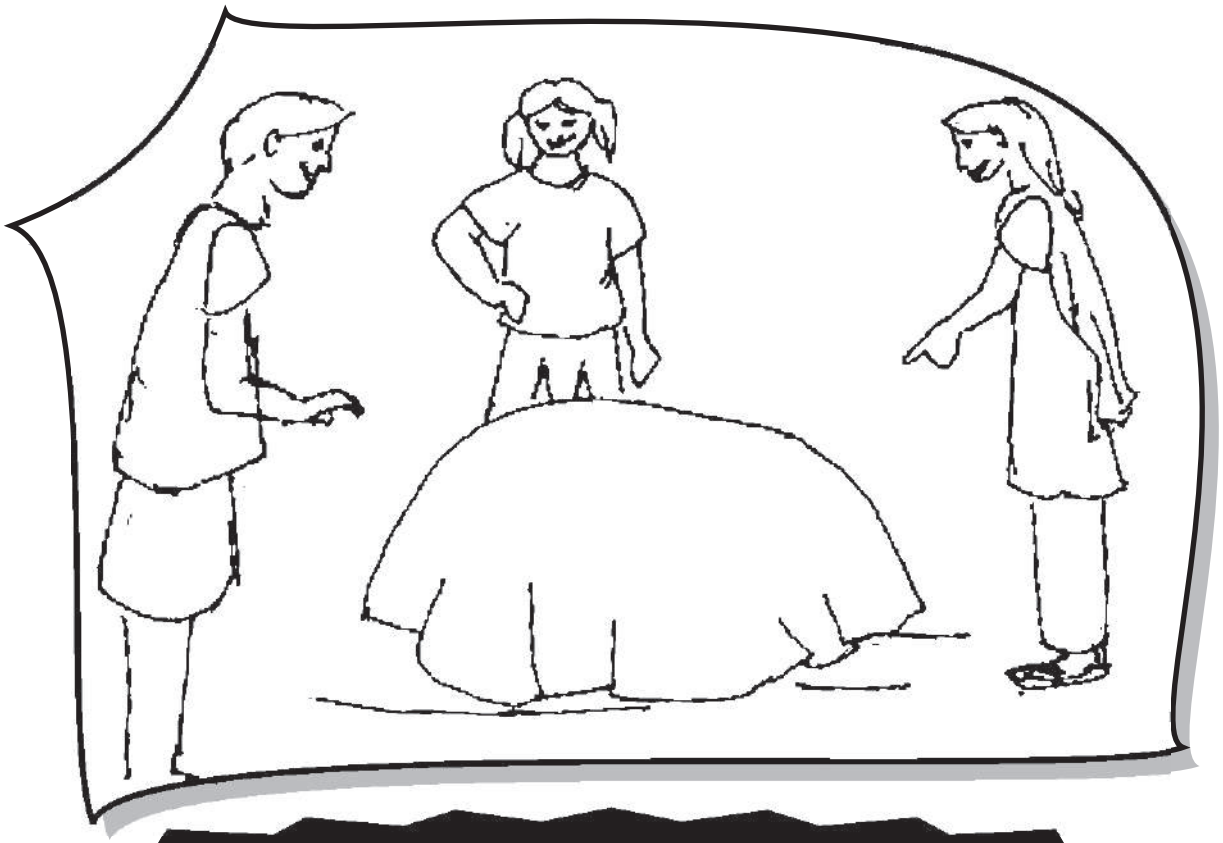

यह खेल एक नये समूह में एक दूसरे के बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

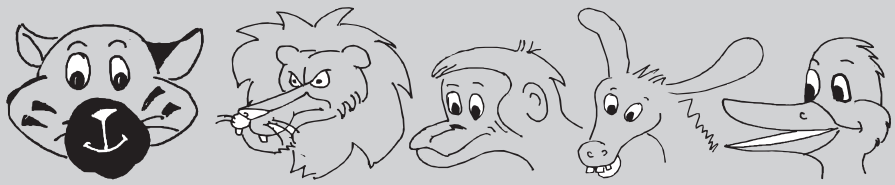

खेल संख्या 9

लीडर कौन

- ☺ समूह में से एक बच्चे को दूर जाने के लिये कहिये।
- ☺ बाकी बच्चों को कहें कि वे यह तय कर लें कि उनमे से कौन लीडर है।
- ☺ लीडर हाथ पैर या चेहरे से कोई हरकत करेगा और सभी बच्चे उसे दोहराएंगे। कुछ देर बाद लीडर अपनी हरकत बदल देगा और बाकी सब भी वही करेंगे जो लीडर ने किया।
- ☺ बाहर गए बच्चे को वापस बुलायें और उसे ये पता लगाने को कहें कि लीडर कौन है।
- ☺ जब लीडर पहचाना जाए तो वह समूह से बाहर जाएगा और एक नया लीडर चुना जाएगा।

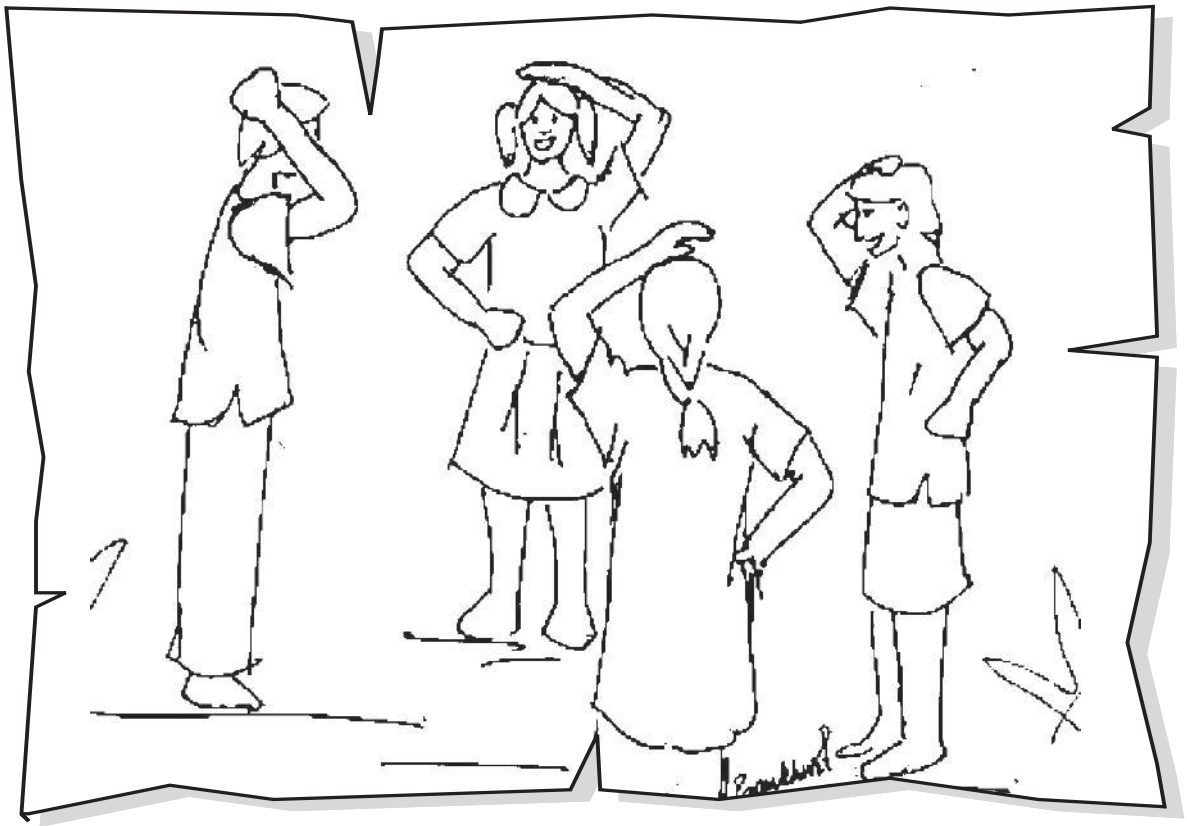

इस खेल से बच्चों में नेतृत्व की क्षमता का विकास होता है और बच्चे अपना लीडर चुनने की प्रकिया सीखते हैं।

खेल संख्या 10

अरे दीवानो! मुझे पहचानो!

- ☺ सभी बच्चों को एक गोले मे खड़ा होने को कहिये।
- ☺ इनमें से एक की आँखों पर पट्टी बाँध दीजिये और गोले के बीच में लाइए। उसे तब तक गोल - गोल घुमाइए जब तक उसे यह पता न हो कि वह किसकी ओर मुँह करे खड़ा है।
- ☺ वह बच्चा किसी भी दिशा में इशारा करेगा। जिसकी ओर इशारा किया गया है वह बच्चा फुसफुसा कर या अपनी आवाज़ बदल कर कुछ कहेगा।
- ☺ बीच में खड़े बच्चे को पहचानना है कि यह आवाज़ किसकी है।
- ☺ अगर वह नहीं पहचान पाता है तो वह कहीं और इशारा करेगा जब वह किसी की आवाज़ पहचान ले तो जिसकी आवाज पकड़ी गई है वह बीच में आ जाएगा और उसके आँखों पर पट्टी बांधी जाएगी।

ध्यान रहे –

☞ यह खेल उन्हीं बच्चों के साथ खेलें जो पहले से एक दूसरे को जानते हों।

इस खेल से बच्चों में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता का विकास होता है। साथ ही साथ परस्पर घुलने मिलने का अवसर मिलता है।

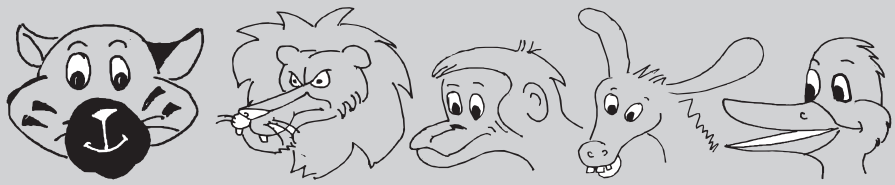

खेल संख्या 11

क्या बदला है?

- ☺ सभी बच्चों को दो - दो का जोड़ा बनाने के लिये कहिये।
- ☺ सभी बच्चे अपने-अपने जोड़ीदार को और उसके कपड़ों को ध्यान से देखेंगे।
- ☺ फिर सभी अपने-अपने जोड़ीदार की ओर पीठ करके खड़े हो जायेगे ताकि वे एक दूसरे को न देख पाएँ।
- ☺ सभी बच्चों को अपनी दिखावट में तीन बदलाव लाने हैं। (जैसे- कमीज के खुले बटन बन्द करना या कमीज की बाजु मोड़ना)
- ☺ बच्चे फिर अपने जोड़ीदार की ओर मुँह करेंगे और एक दूसरे के बदलाव पहचानने की कोशिश करेंगे।

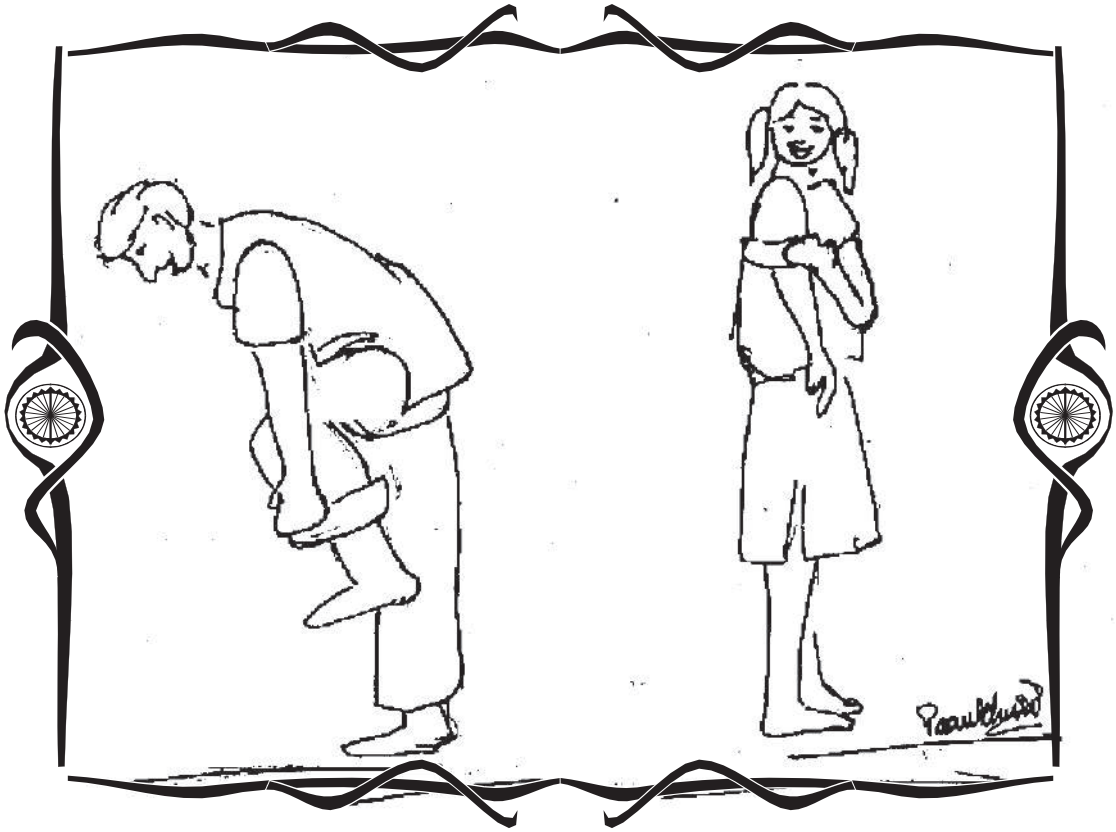

इस खेल से बच्चों में अवलोकन क्षमता का विकास होता है।

खेल संख्या 12

तुम भी बोलो—हम भी बोलें

- ☺ सब बच्चों को एक गोले मे खड़ा होने को कहिये।
- ☺ एक बच्चे को गेंद दीजिये ।
- ☺ वह बच्चा गेंद किसी दूसरे की ओर फेंकेगा और फेंकते समय गेंद पकड़ने वाले बच्चे का एक गुण बताएगा।
- ☺ वह बच्चा गेंद आगे किसी और की ओर फेंकेगा । इस तरह बच्चे एक दूसरे की ओर गेंद फेंकेगे और एक दूसरे के बारे मे कुछ बताते रहेंगे।

ध्यान रहे –

- ☞ गेंद जल्दी जल्दी एक दूसरे की ओर फेंकी जाए ताकि बिना सोचे जो पहला शब्द लोगों के ध्यान मे आता हैं वही बोला जाए।

इस खेल में सामूहिक एकता का विकास होता है और बच्चे एक दूसरे के बारे में ज्यादा जान पाते हैं।

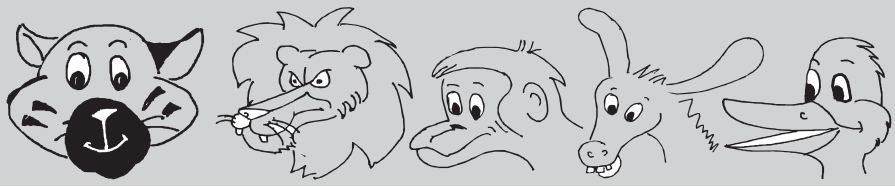

खेल संख्या 13

खेल–खेल बने कहानी

- ☺ सभी बच्चों को एक गोले में बैठने के लिये कहिये।
- ☺ एक बच्चा एक वाक्य कहेगा।
- ☺ अगला बच्चा उसमें एक ओर वाक्य जोड़ देगा। बच्चों को ऐसे वाक्य जोड़-जोड़ कर एक पूरी कहानी बनानी है।

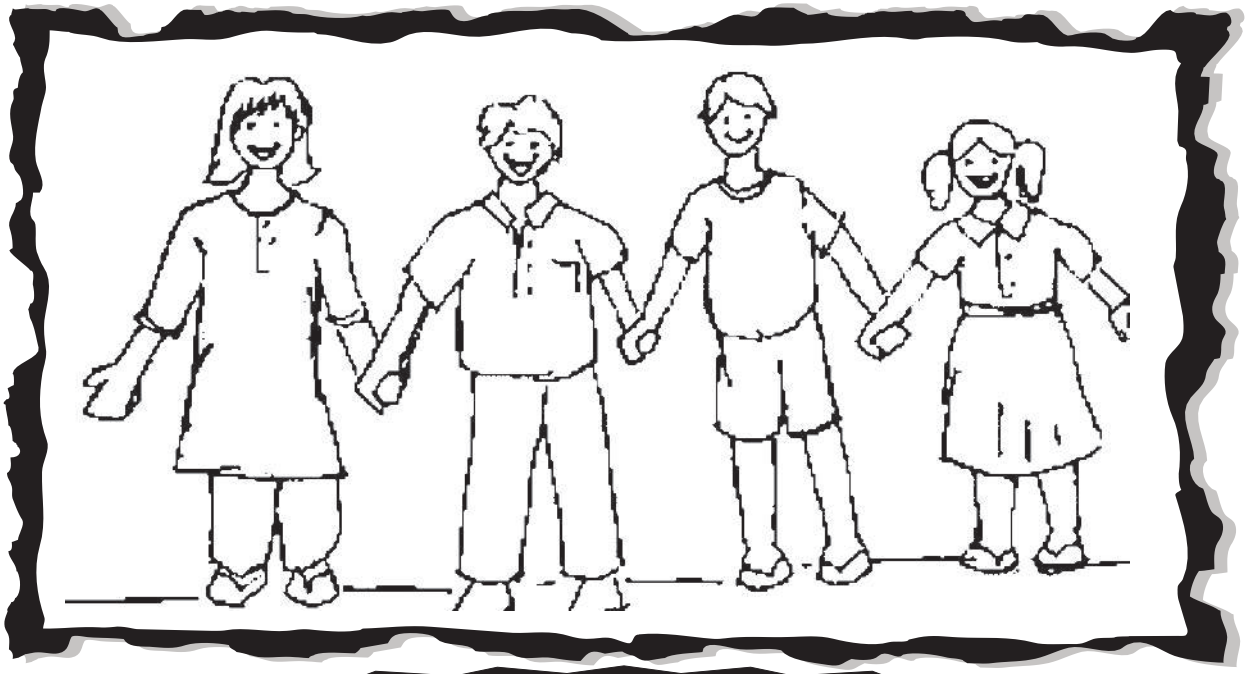

यह खेल बच्चों मे रचनात्मकता का विकास करता है।

खेल संख्या 14

पुतला बनाओ

- ☺ समूह के सभी बच्चों को दो-दो के जोड़े मे बाँट दें।
- ☺ जोड़े में से एक बच्चा मिट्टी है और दूसरा बच्चा उसी मिट्टी से एक पुतला बनाएगा।
- ☺ मिट्टी को वैसे ही मुड़ना है जैसे उसका जोड़ीदार उसे मोड़ेगा ।
- ☺ यह जोड़ीदार पुतले को अपने पसन्द का आकार दे सकता है। (जैसे- क्रिकेट खेलता हुआ पुतला,बैठा हुआ पुतला , आदि)
- ☺ या पहले से दिया गया भाव दिखाने के लिए भी पुतला बनाया जा सकता है। (जैसे- डर, गुस्सा, खुशी)

ध्यान रहे –

- ☞ बच्चों को कहें कि वे अपने जोड़ीदार को पूरी सहभागिता दें।
- ☞ बच्चों से कहें कि वे जटिल आकार या मुद्रा का पुतला बनाने की कोशिश ना करें।

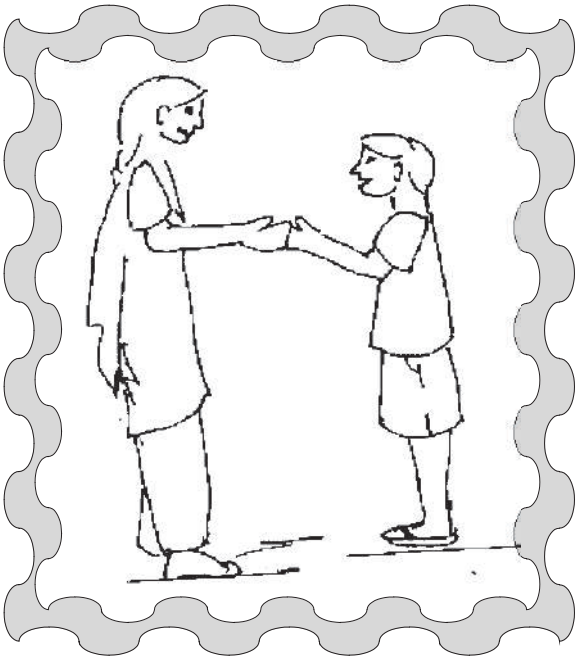

इस खेल से बच्चों मे विभिन्न हाव-भाव व आकृतियों को पहचानने का अवसर मिलता है।

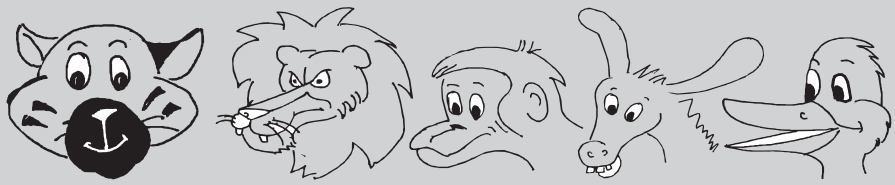

खेल संख्या 15

मेरा आईना

- ☺ बच्चों को दो समूहों में बांट दीजिये।
- ☺ पहले समूह में से दो बच्चे आपस में यह तय कर लेंगे कि कौन आईना है।
- ☺ दूसरे समूह के सामने इनमें से एक बच्चा हाथ या पैर से कुछ हरकत करेगा और आईना बना बच्चा उसकी नकल करेगा।
- ☺ दूसरे समूह को यह पता लगाना है कि दोनों मे से कौन आईना है।

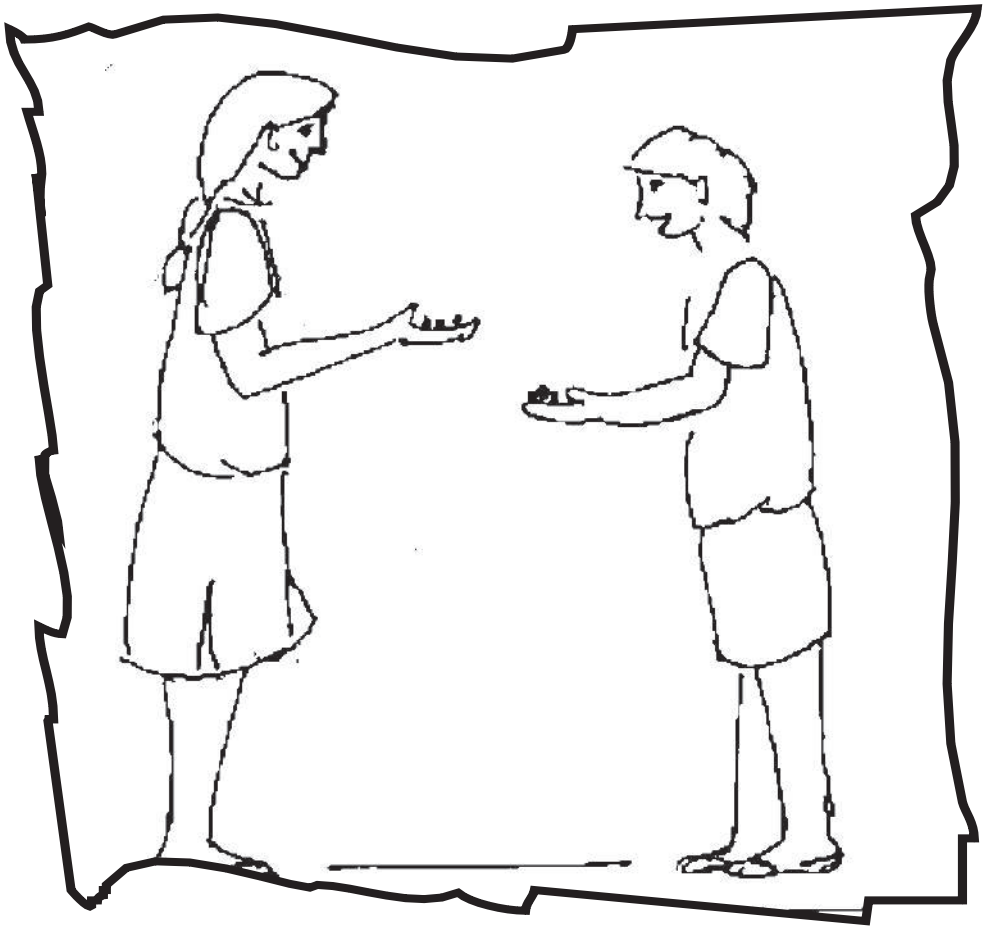

इस खेल से बच्चों में अवलोकन व ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता का विकास होता है।

आपको खेलों के दौरान क्या करना चाहिए

- ☞ सभी बच्चों को बराबरी से भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें।
- ☞ जो बच्चे पहले से एक दूसरे को नहीं जानते हों उनको साथ में घुलने मिलने के लिए बढ़ावा दें।
- ☞ सबको खेलने के लिये आमंत्रित करें मगर किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे खेलने के लिये न कहें।
- ☞ एजुकेटर को चाहिए कि वह इन खेलों में खुद भी भाग लें और आनन्द लें।
- ☞ यह जरूरी है कि एजुकेटर खेलों के दौरान प्रसन्नचित्त व उत्साहित दिखें।

इन खेलों से जुड़े ज़मीनी स्तर के अनुभव

हमने बच्चों के साथ यह खेल खेले। इन खेलों के दौरान हमने भी बच्चों के साथ भाग लिया। हमने पाया कि स्ट्रीट एजुकेटर के खेलों मे साथ भाग लेने से बच्चों में उत्साह और जोश बढ़ जाता है। कई बार खेल के दौरान कई बच्चों को खेल समझ आने में थोड़ा समय लगता है। इसी लिये हमें यह ध्यान रखना है कि खेलने से पहले खेल को सही तरीके से समझाएँ और एक बार खेल कर भी उदाहरण दें। उसके बाद ही खेल शुरू करें।

खेल के दौरान कुछ बच्चे उम्र में बड़े होने के कारण छोटे बच्चों को बराबरी से भाग नहीं लेने देते। हमें यह ध्यान रखना पड़ा कि सभी बच्चे बराबरी से भाग लें। इन खेलों के द्वारा बच्चे एक दूसरे के साथ मिलकर रहना सीखते हैं।

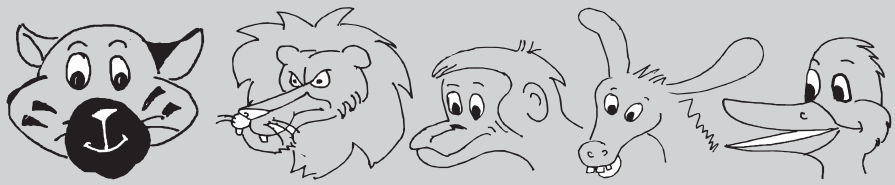

भाग – 2

कहानियां और इन्हें सुनाने के विभिन्न माध्यम

कहानियों की विशेषताएं

- ☞ अपने अनुभवों को बांटने और उनके बारे में सोचने से बच्चों और समूहों को एक दूसरे के साथ जुड़ने में मदद मिलती है।
- ☞ सरल कहानियां गहरी छिपी हुई सच्चाइयों और भावनाओं को सामने ला सकती हैं।
- ☞ आप बीती कहानियां सुना कर दूसरों को प्रभावित करने से सुनाने वाले का आत्मसम्मान बढ़ता है।
- ☞ कहानियाँ लोगों के सोचने के तरीके और व्यवहार को बदलने में प्रभावशाली होती हैं।
- ☞ कहानियों के द्वारा अलग- अलग विषयों में बच्चों की रुचि बढ़ाई जा सकती है।
- ☞ कहानियां केवल मंनोरंजन के लिए या ज्ञान और जागरूकता बढ़ाने के लिये प्रयोग में लाई जा सकती हैं।

आपको क्या करना चाहिए

- ☞ कहानियों को समझें और प्रभावशाली तरीके से उनका व्याख्यान करें।
- ☞ कहानी को याद करें या उसे प्रभावशाली रूप से पढ़कर सुनाएं।
- ☞ अपने व्यक्तित्व, चहरे के भाव, आवाज और इशारों से कहानी को प्रभावशाली बनाएं।

एजुकेटर नोट

- ☞ आप पहले से लिखी गई कहानियों का प्रयोग कर सकते हैं। या
- ☞ अपनी कहानियां सुना सकते हैं और बच्चों को उनकी कहानियां सुनाने के लिए प्रोत्साहित भी कर सकते हैं।

कहानियां सुनाने के लिये आप विभिन्न माध्यमों का प्रयोग कर सकते हैं और कहानियों को ज्यादा मनोरंजक बना सकते हैं।
इनमे से कुछ माध्यम है के बारे में विवरण यहां दिया जा रहा है।

तमाशा कठपुतली का

उपयोगिता

- कठपुतलियों का तमाशा एक महत्वपूर्ण संचार साधक है जिसके द्वारा धारणाओं, विचारों, विभिन्न विषयों और सन्देशों को बच्चों तक पहुंचाया जा सकता है।
- इस माध्यम से भाषा, विज्ञान, समाज, गणित, बच्चों के अधिकार जैसे विषयों के बारे में सूचना दी जा सकती है।
- इस कार्यक्रम के द्वारा बच्चे चित्रकारी, संगीत, दस्तकारी जैसी कलाएं सीख सकते हैं।
- कई संस्थायें कठपुतली की कला का प्रयोग लोगों तक अपने सन्देश पहुंचाने के लिये करती हैं।
- बच्चे कठपुतली बनाने और कठपुतली का तमाशा करने मे रुचि लेते हैं।

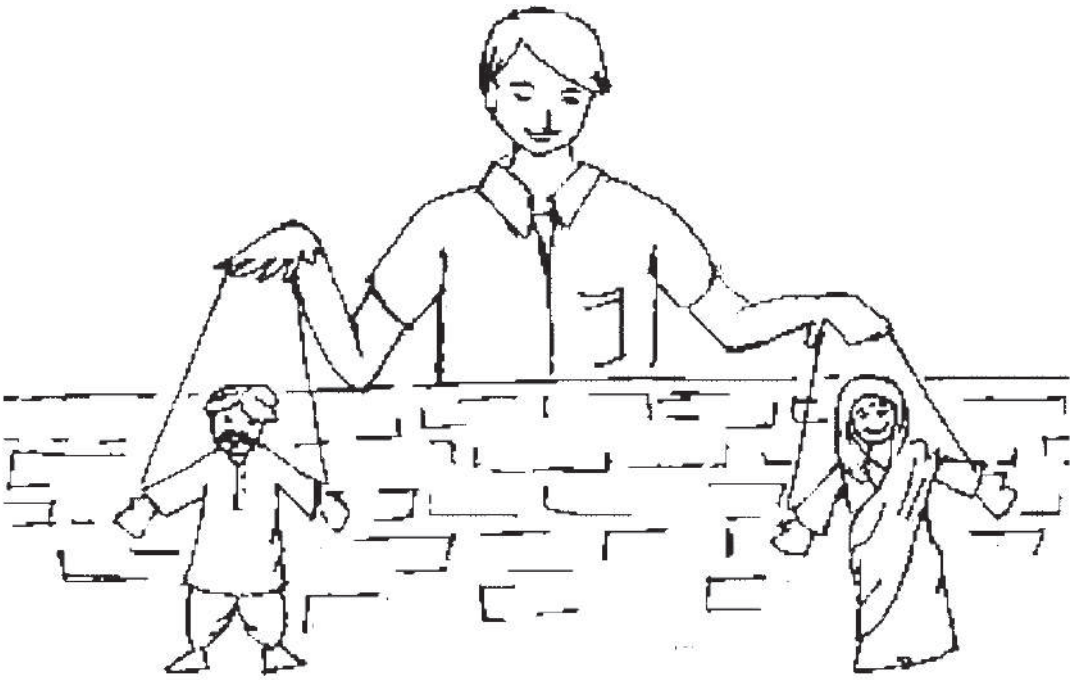

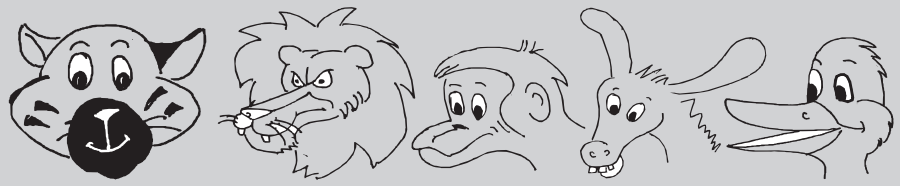

अपनी कठपुतलियां बनाएं

(क) एक मोटे कागज पर अपनी कहानी के किरदार का चेहरा बनाएं और उसके नीचे एक चौड़ी पट्टी बनाये। इस चित्र की तरह

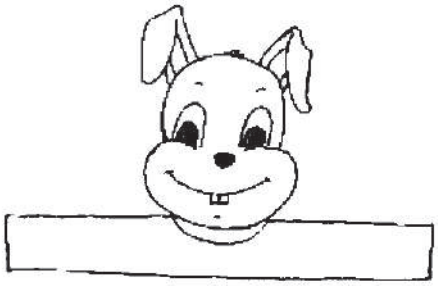

- ☺ इसमे रंग भरें और काट लें।
- ☺ नीचे वाली पटटी को अपनी उँगली पर लपेट कर चिपका लें।
- ☺ आप कहानी के अनुसार अपनी कठपुतली के चहरे के भाव बदल सकते हैं।

(ख) आप पुरानी चीजों का प्रयोग कर के भी कठपुतली बना सकते हैं :

जैसे, प्लास्टिक के लिफाफे पर कागज़ की आँखें, कान और नाक चिपका कर अपने हाथ से उसका मुंह बना सकते हैं।

आपको चाहिए :

- ☞ एक लिफाफा
- ☞ कागज के टुकडे
- ☞ रंग
- ☞ गोंद

(आप पुराने कपड़े या मोज़े का भी प्रयोग कर सकते हैं)

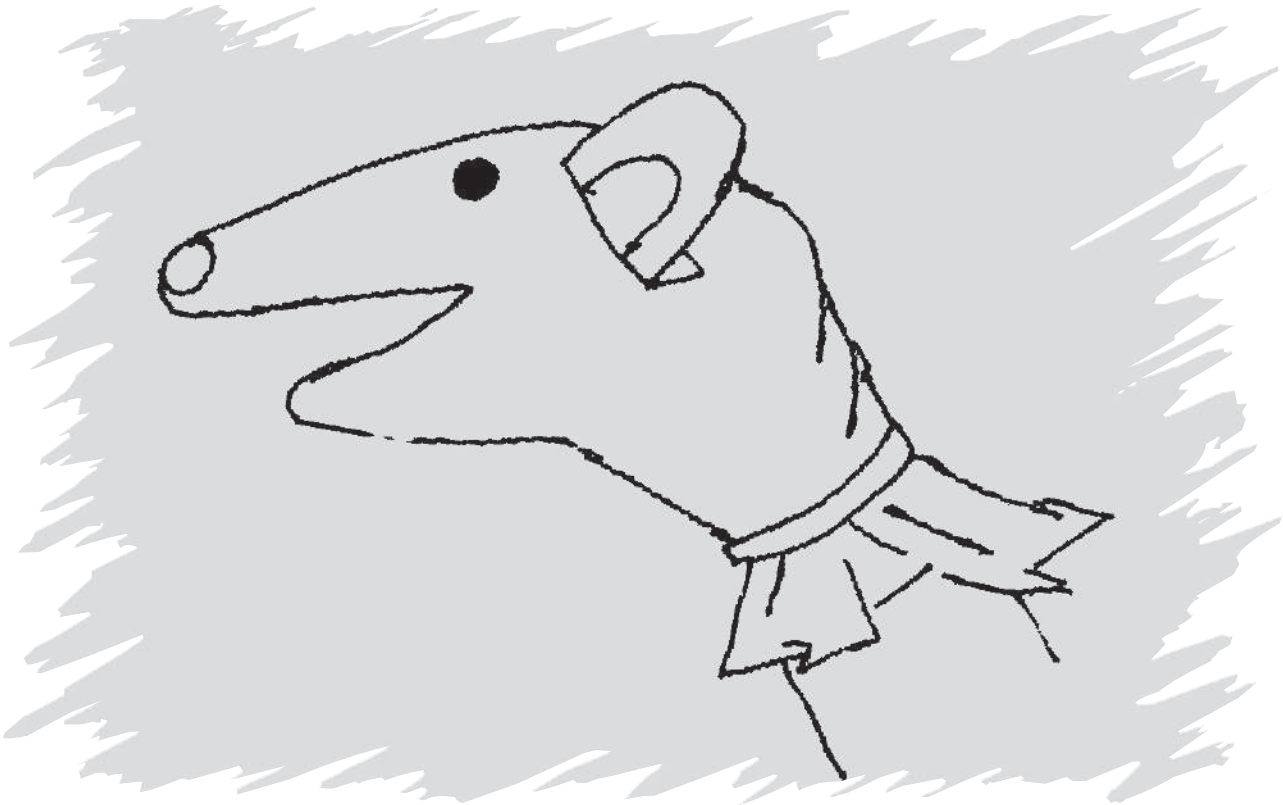

आपकी कठपुतली कुछ इस प्रकार दिखेगी

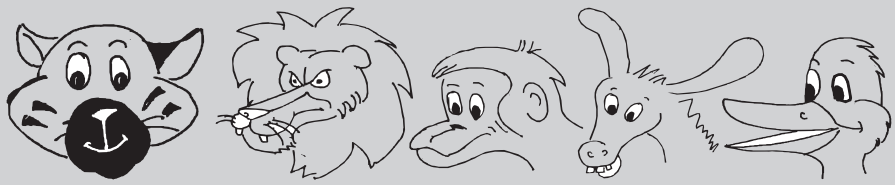

(ग) लकड़ी की डन्डी या टहनी पर भी कठपुतली बना सकते हैं :

आपको चाहिये :

- ☞ कागज
- ☞ लकडी की डन्डी / टहनी
- ☞ रंग
- ☞ गोंद

☺ कागज़ पर अपनी कहानी के किरदार की तस्वीर बनाएं। इसमें रंग भरें और इसे काट लें।
☺ इस चित्र को एक लकड़ी पर चिपका दें।

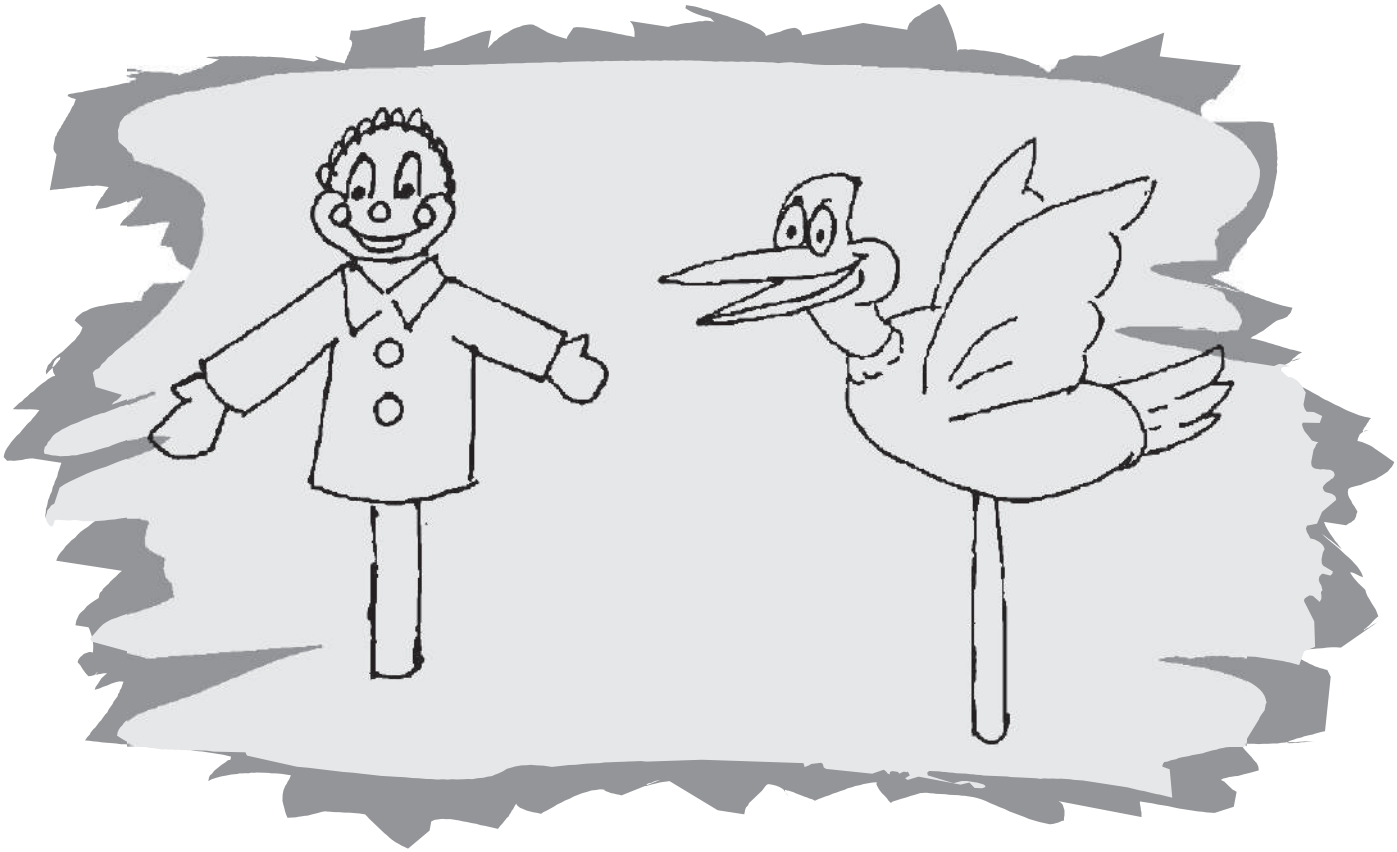

आपकी कठपुतली कुछ इस प्रकार दिखेगी

आपको क्या करना चाहिये :

- ☞ कहानी के अनुसार कठपुतली बनाए।
- ☞ कहानी मे संगीत, गाने या चुटकलों का प्रयोग करके उसे मनोरंजक बनाएं।
- ☞ अलग-अलग किरदारों के लिये अपनी आवाज बदल-बदल कर बोलें।
- ☞ बच्चों को उनकी कहानियां कठपुतली के द्वारा सुनाने का अवसर दें।
- ☞ हर बच्चा किसी एक व्यक्ति की कठपुतली बनाकर उस की नकल करते हुए तमाशा दिखा सकता है।

ध्यान रहे –

- ☞ बच्चों द्वारा दिखाए गए तमाशे के बाद उस मुद्दे पर चर्चा कर सकते हैं। आप इससे बच्चों के दृष्टिकोण को जान सकते हैं और आवश्यक सन्देश दे सकते हैं।

कठपुतलियों से जुड़े जमीनी स्तर के अनुभव

हमने एक कहानी के सारे किरदारों की कठपुतलियां बनाई। फिर कठपुतली के माध्यम से बच्चों को कहानी सुनाई। इस अनुभव से हमें इस माध्यम के बारे में कुछ फायदे और कुछ कमजोरियां भी पता चली। बच्चों ने कहानी को ज्यादा आनंद से सुना। कठपुतली देखकर बच्चों को किरदार की कल्पना करने मे आसानी होती हैं। कठपुतलियों के कारण बच्चे ज्यादा ध्यान से कहानियां सुनते हैं और नई चीज देखकर आकर्षित भी होते हैं। पर कठपुलियाँ प्रयोग करते समय कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिये। ज्यादा किरदारों वाली कहानियों के लिये एक से अधिक लोग हों तो बेहतर रहता है। और आप कठपुतलियों के साथ-साथ दृश्य समझाने के लिये कुछ और चित्र भी बना सकते हैं। कहानी को मज़ेदार बनाने के लिये आप मजाकिया कठपुतलियाँ भी बना सकते हैं। इस कार्यक्रम में बच्चों को बहुत आनन्द आया। ऊपर लिखी बातें को ध्यान मे रखा जाए तो इसे और भी सफल बनाया जा सकता है।

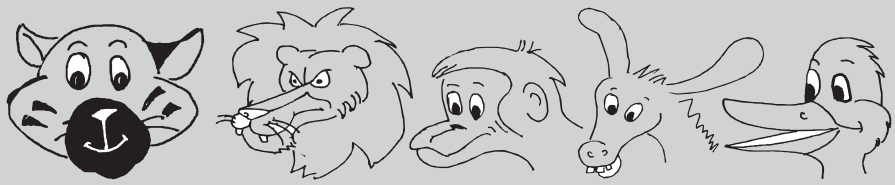

नाटक

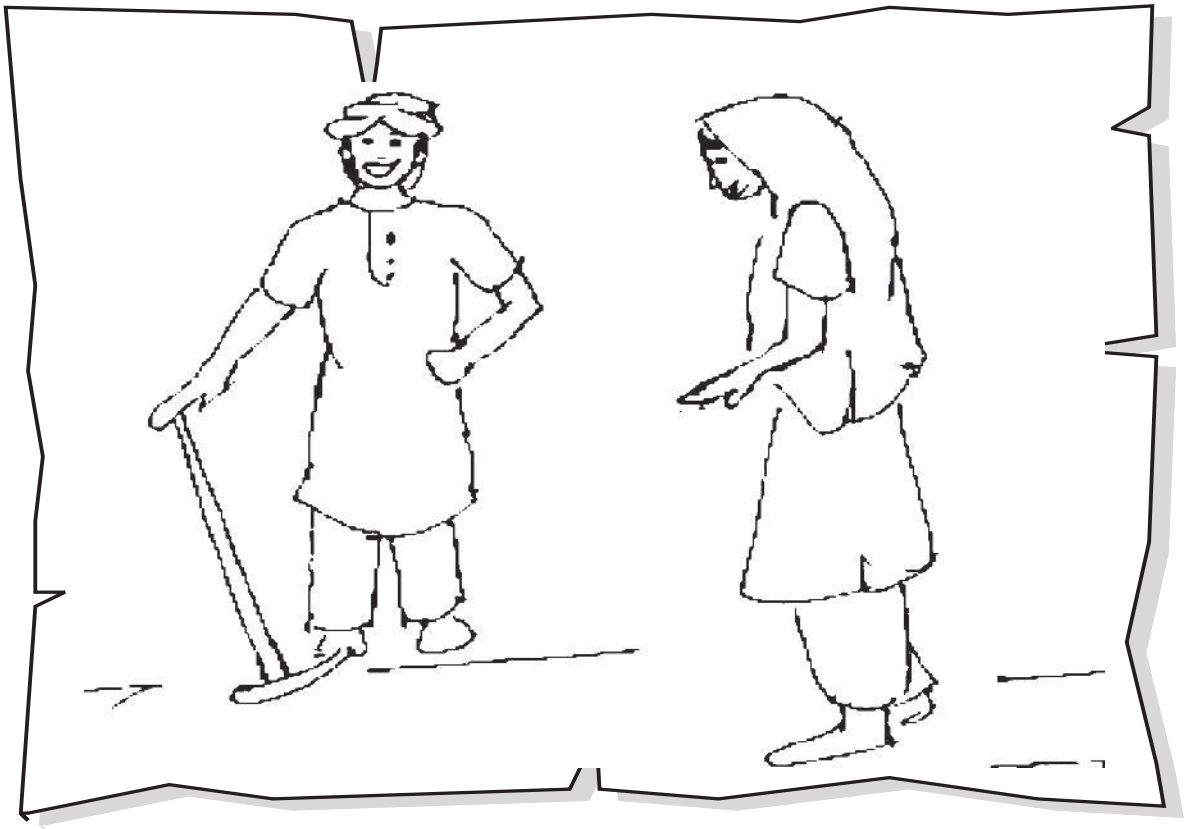

उपयोगिता

- नाटक एक मनोरंजक माध्यम है जो आसानी से लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकता है।
- नाटक द्वारा कहानियाँ ज्यादा आसानी से समझ आती हैं और ज्यादा समय तक याद भी रहती हैं।
- नाटक में दर्शकों की भागीदारी ली जा सकती है।
- भाग लेने वाले बच्चे मिल कर काम करना सीखते हैं।
- बच्चों में संवाद करने की निपुणता को बढ़ावा मिलता है।
- बिना पढ़े -लिखे लोगों तक भी इस माध्यम की पहुंच है।
- नाटक उन बन्दिशों से मुक्ति दिलाते हैं जो अज्ञानता, अशिक्षा, डर, लज्जा, संकोच, सामाजिक बहिष्कार आदि कि वजह से बच्चों में होती है।
- नाटक में भाग लेने वाले बच्चों का आत्म सम्मान बढ़ता है।
- लोगों को यह आभास होता है कि वे खुद अपनी परिस्थितियों को बदलने की क्षमता रखते हैं।

नाटकों का प्रयोग कैसे करें?

- महत्वपूर्ण मुद्दों को नाटक द्वारा बच्चों तक पहुचाएं। (जैसे- नशा करने के नुकसान)
- आप नाटकों में बच्चों को अभिनय करने का अवसर दे सकते हैं या खुद नाटक में भाग लेकर बच्चों को शिक्षा दे सकते हैं।
- इन नाटकों के दर्शक बच्चे खुद हो सकते हैं या इन नाटकों के द्वारा बच्चे अन्य लोगों से संवाद कर सकते हैं। जैसेः बच्चों के आस- पास के लोग, पुलिस, परिवार वाले, आम जनता, इत्यादि तक अपने मन की बात पहुंचाने के लिये नाटकों का प्रयोग किया जा सकता है।

ध्यान रहे

- बच्चों को खुद कहानी लिखने और किरदार चुनने का अवसर दें।
- बच्चों की जरूरतों के अनुसार नाटक बनाएं और उनकी ही बोल- चाल की भाषा को प्रयोग करने का प्रोत्साहेन दें। जैसे :- बच्चों के व्यापार के नतीजे, प्रवासन के नतीजे, बच्चों के अधिकार, नशा करने के बुरे नतीजे, आदि।
- बच्चों को उनकी निजी परिस्थितियों का अभिनय करने का अवसर दें। इससे वे अपनी समस्या सुलझाने के नए तरीकों को समझ सकते हैं।
- एक ही मुद्दे को अलग- अलग लोगों के दृष्टिकोण से दर्शाने के लिए नुक्कड़ नाटक का प्रयोग किया जा सकता है।
- बच्चों में एक दूसरे की जरूरतों और धारणाओं को समझने की क्षमता बढ़ाने के लिये और समस्या या उलझन को दर्शाने के लिए नाटकों का प्रयोग किया जा सकता है।

एजुकेटर नोट

- बच्चों को नाटक के दौरान इन बातों का ध्यान रखना चाहिये
- नाटक के समय दर्शकों से आँखों का सम्पर्क बनाये रखें।
- दर्शकों से संवाद करें और सवाल पूछें ताकि वे भी नाटकों में भाग लें। यही लोगों की जागरूकता की ओर पहला कदम है।
- दर्शकों से नाटक में दर्शाए गई कहानी पर चर्चा करें। इससे नए दृष्टिकोण सामने आएंगे।
- नाटकों के लिए कहानियां बच्चों की जरूरतों और सच्चाइयों पर आधारित और रचानात्मक भी होना चाहिये।

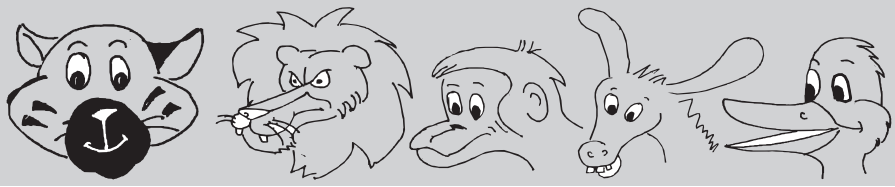

कागज की कमीज

☺ हर बच्चे से कागज की एक कमीज बनवाएं। कागज को दिखाए गए चित्र की तरह काटें और मोंड़ लें।

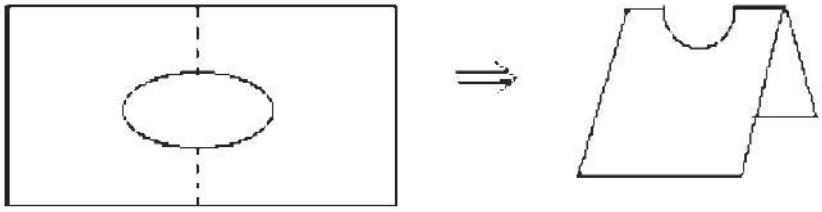

बच्चों को चाहिए

- ☞ चार्ट पेपर
- ☞ कैंची
- ☞ पेन्सिल एवं
- ☞ रंग

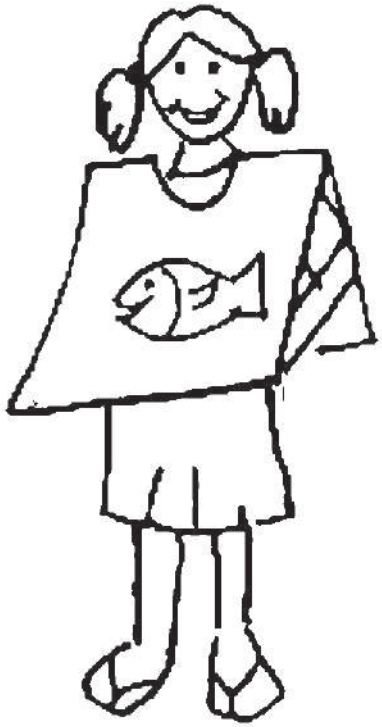

☺ बच्चों से कहें कि वे कुछ रोमांचक विषयों के बारें मे सोचकर एक कहानी बनाएं और इस कागज़ की कमीज़ पर चित्रों द्वारा अपनी कहानी दर्शाएं ।
जैसे– ''आपका कल का दिन कैसे गया ?''
या ''अपने बारे में एक अदभुत सच्चाई बताओ जो हमें पहले से न मालूम हो''
या ''आप इस समय कैसा महसूस कर रहे हैं''।
इन सवालों का जवाब बच्चे अपनी कागज़ की कमीज़ पर चित्रों द्वारा बनाएं और इस कमीज को पहन कर बाकी बच्चों को भी दिखाएं।

इस माध्यम से बच्चे शब्दों या किसी भाषा का प्रयोग किए बिना अपनी कहानी चित्रों के माध्यम से आसानी से सुना सकते हैं।

काट छांट कर चित्र बनाएं

☺ बच्चों को तीन या चार के समूह मे बांट दें। बच्चों को चाहिये :

- ☞ कुछ पुराने अखबार,
- ☞ एक बड़ा चार्ट पेपर
- ☞ गोंद, एवं
- ☞ कैंची।

☺ समूहों से कहें कि वे एक निर्धारित विषय पर अपनी समझ को दर्शाते हुए एक चित्र बनाएं।

☺ इस चित्र के लिए पुराने अखबारों मे से वे तस्वीरें काटें जो इस विषय पर कुछ कहती हों।

☺ इन तस्वीरों को चार्ट पर साथ चिपका कर एक नई तस्वीर बनाएं।

☺ जब हर समूह अपनी तस्वीर बना ले तब वे दूसरे समूहों को अपनी तस्वीर का मतलब समझाएं।

इस माध्यम से बच्चे किसी विषय पर अपनी धारणाएं सामने रख सकते हैं और दूसरों के विचार भी समझ सकते हैं।

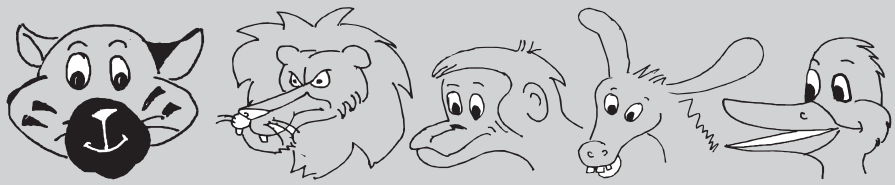

चित्रों द्वारा अपनी कहानी सुनाएं

बच्चों को चाहिए

- ☞कागज़
- ☞पैन्सिल
- ☞रंग

हर बच्चे से कहिए कि वह अपनी कहानियां चित्रों द्वारा सुनाएं। वह अपनी कहानी के हर दृश्य और घटना के लिये एक चित्र बनाएं और यह चित्र लोगों को दिखाते हुए अपनी कहानी सुनाएं। कहानी के बाद चर्चा करने से बच्चों के विचार सामने रखें जा सकते हैं। बच्चे चित्र बनाने में आनन्द लेते हैं साथ ही साथ यह माध्यम ज्ञानवर्धक भी है।

जमीनी स्तर के अनुभव

हमने एक साधारण कहानी को सुनाने के लिये कुछ चित्र बनाये । इन चित्रों मे हमने कहानी के मुख्य दृश्य बनाएं। हमने इस बात का ध्यान रखा कि चित्र सरल हों और साफ-साफ दिखें। हमने पाया कि इन चित्रों कि वजह से बच्चे ज्यादा ध्यान से कहानी सुन रहे थे। बच्चे चित्रों के कारण आसानी से कल्पना कर पाते हैं। हमने जब इस माध्यम से कहानी सुनाई तब बच्चों को बहुत मजा आया। बच्चों ने वही कहानी दोबारा सुनने की जिद की। दोबारा सुनाने पर भी बच्चों ने कहानी उतने ही चाव से सुनी।

कहानी के बाद हमने बच्चों से पूछा कि इस कहानी से उन्हें क्या शिक्षा मिलती है। इस विषय पर भी बच्चों ने चाव से बातचीत की। उदाहरण के तौर पर चित्रों द्वारा कहानी इस तरह सुनाई जा सकती है-

इस माध्यम से बच्चे अपने मन की बात आसानी से कहानियों द्वारा सुना सकते हैं।

चित्र –1 एक लड़का था जिसका नाम था भोलू । भोलू के पास कई भेड़ें थी (बच्चों से पूछे यदि उन्हें भेड़ों के बारे मे जानकारी है या कभी भेड़ देखी हैं उन्हें बतायें की भेड़ घास खाती है) उस लड़के के घर के आसपास ज्यादा घास नहीं थी इसलिये वह अपनी भेड़ों को लेकर रोज जंगल में जाता था, जहां खूब सारी घास होती थी।

चित्र -2 दिन भर उसकी भेड़ें घास खाती रहती और वह एक जगह बैठा रहता। रोज इसी तरह बैठे-बैठे वह ऊब जाता था। वह सोचता था किये भेड़ें रोज घास चरती है और मैं बेकार में यहां बैठा रहता हूं। एक दिन वह ऐसे ही जंगल मे बोर हो रहा था। उसने सोचा क्यों ना मैं कुछ शरारत करूं। इसमे बड़ा मज़ा आयेगा। तभी पास ही जंगल मे कुछ लक्कड़हारों के काम करने की आवाज आयी । भोलू ने सोचा '' चलो इन लोगों को बेवकूफ बनाते हैं। बडा मजा आएगा।''

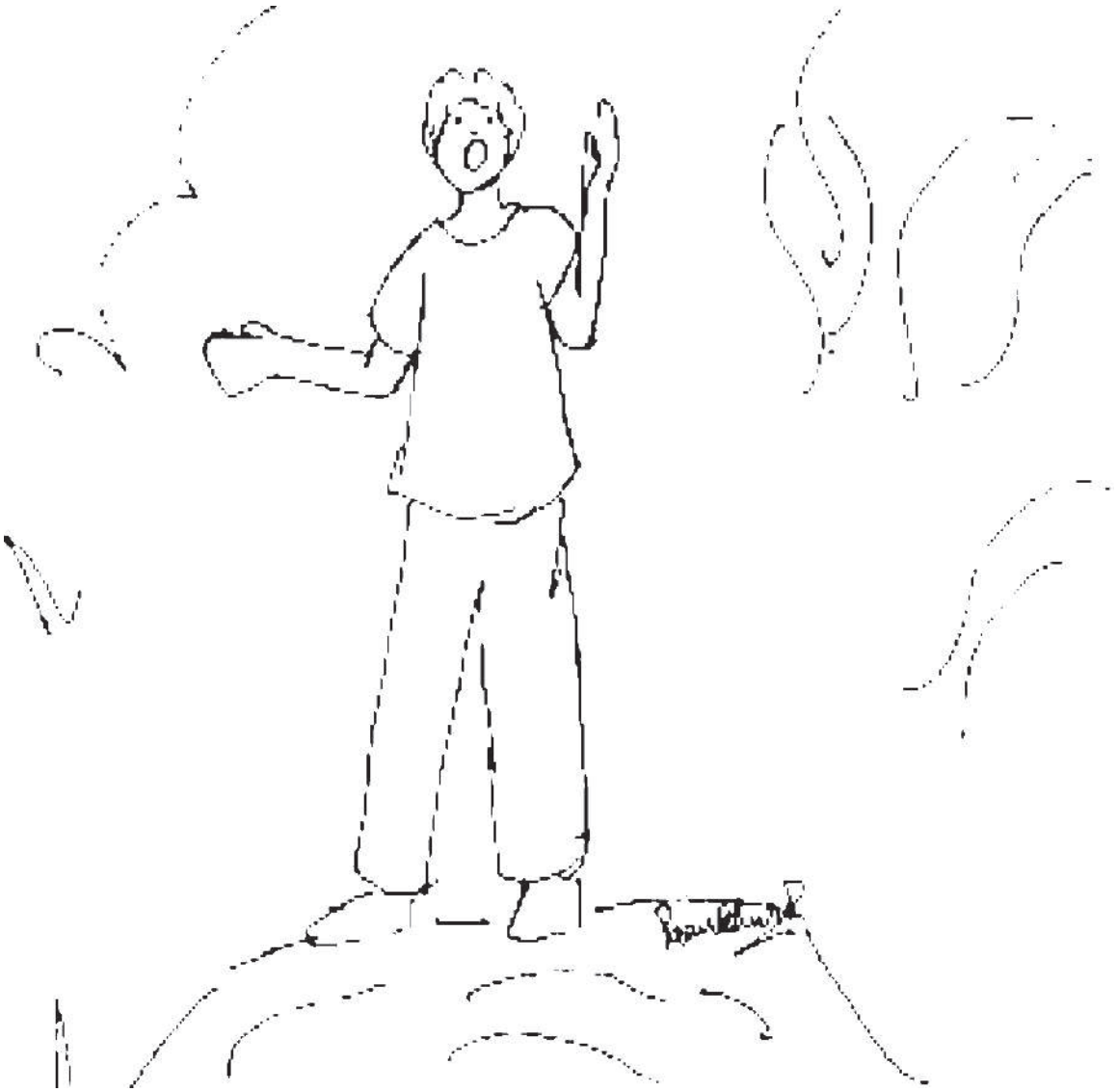

चित्र –3 भोलू को एक मज़ेदार शरारत सूझी और उसने चिल्लाना शुरू किया – ''बचाओ । बचाओ। ''
''शेर आया बचाओ। ''

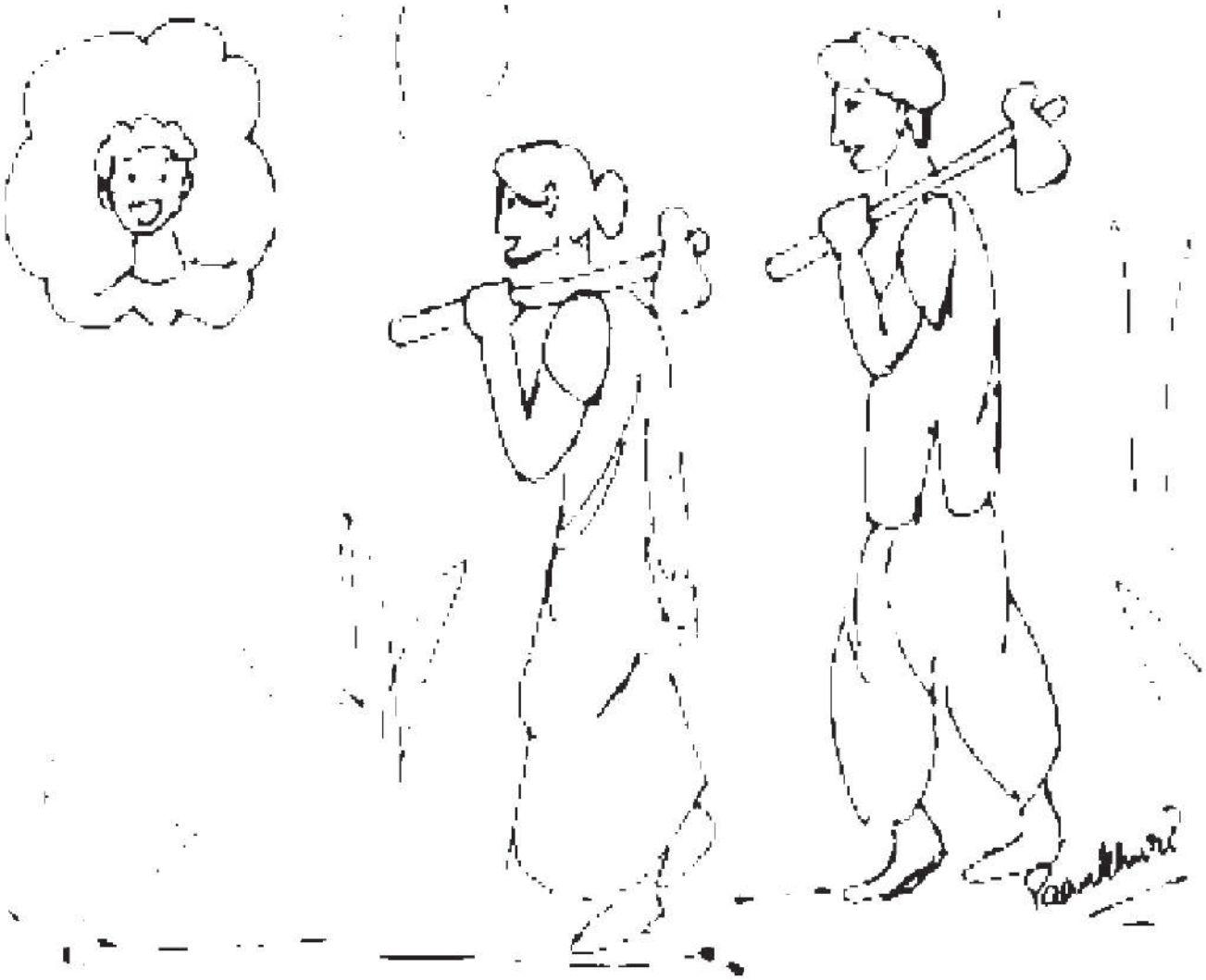

चित्र –4 उसकी आवाज सुनकर काम कर रहे लक्कड़हारे फौरन भोलू को बचाने के लिये भागे – भागे आए। जब वे वहां पहुचे तो वहां कोई शेर नही था। और भोलू खडा होकर हंस रहा था। उन लक्कडहारों को ये देखकर बहुत गुस्सा आया और उन्होंने भोलू को बहुत डाटां। मगर भोलू तो हंस रहा था। उसे लोगों को बेवकूफ बनाकर बहुत मजा आया।

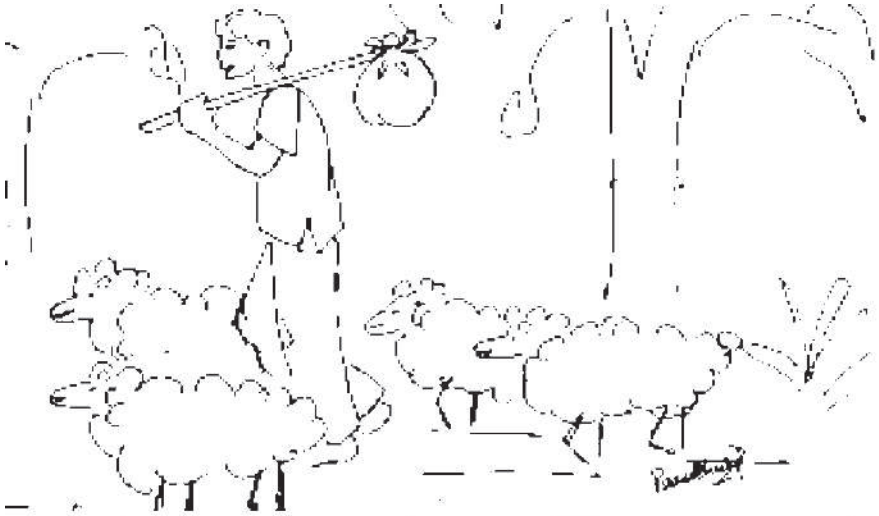

कुछ दिन गुजर गए। भोलू इसी तरह हमेशा अपनी भेड़ों को लेकर जंगल में जाता रहा।

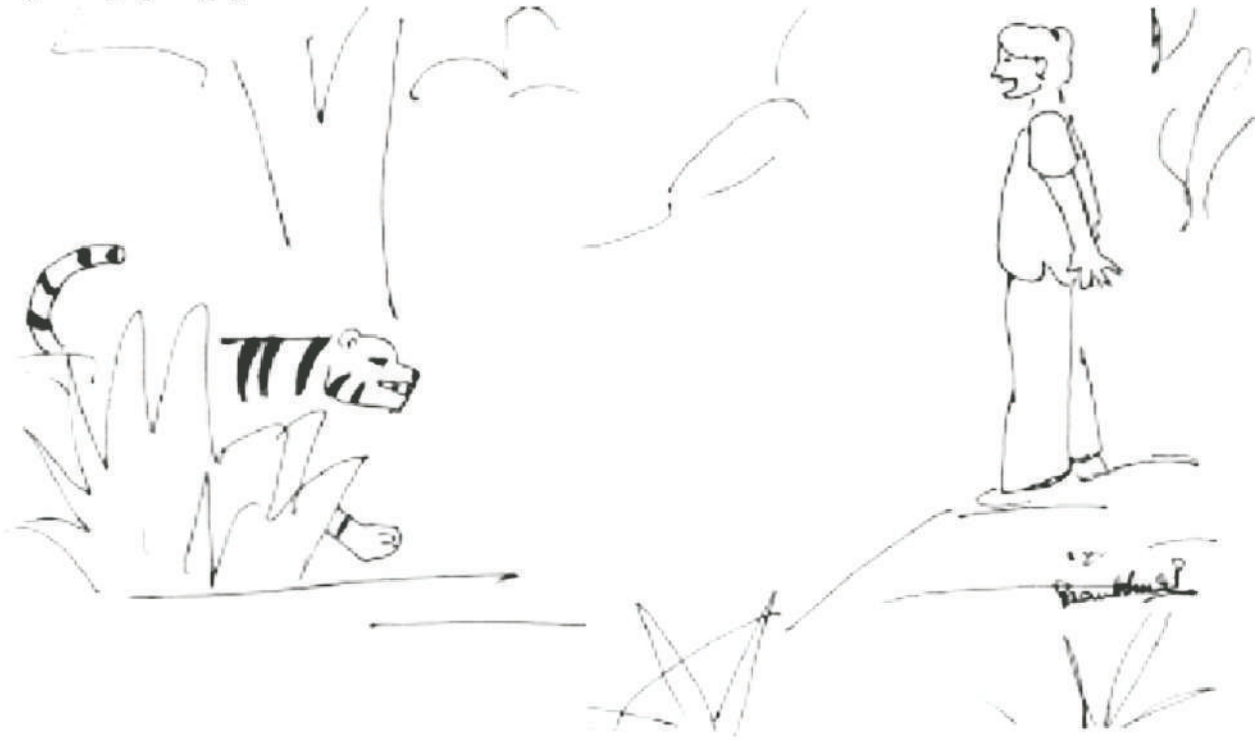

चित्र -5 एक दिन वह हमेशा की तरह जंगल में बैठा था । तभी वहां एक शेर आ गया । भोलू बहुत डर गया। उसने सोचा आज तो ये शेर मुझे और मेरी भेड़ों को खा जाएगा। उसे कुछ समझ नही आया कि वह क्या करे। घबराहट मे वह चिल्लाया - ''मुझे बचाओ। कोई है ये शेर मुझे खा जाएगा। मुझे कोई बचाओ। पास में जो लक्कड़हारे काम कर रहे थे उन्होने भोलू की आवाज सुनी और सोचा '' अरे ये भोलू जरूर हमें फिर से बेवकूफ बना रहा है। आज हम इसकी बातों मे बिल्कुल नहीं आएंगे।

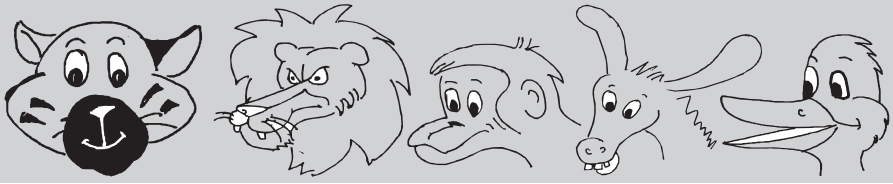

चित्र –6 बेचारा भोलू डर से एक पेड़ पर चढ़ गया और उसकी सारी भेड़ों को शेर खा गया। उसकी मदद करने के लिये कोई नहीं आया।

बच्चों को सिखाने और पढ़ाने के अन्य दूसरे तरीके आप स्वयं सोच सकते हैं–बस इसके लिए सामूहिक, सकारात्मक और रचनात्मक चिंतन की जरूरत है।

References

श्रवीद ैजंसमल;1982द्धय

भ*People in Development- a trainers manual for groups*भ; Banglore, India;(52-59)

ज्वदल श्रंबोवद ;मकण्द्ध ;1993द्धय

भ*Learning through Theatre- new perspectives on theatre in education"*; Rotledge, London; (13-25)

चेतना-प्लान संस्था, निज़ामुद्दीन से लेकर ग्वालियर तक रेलवे स्टेशनों पर आश्रित सड़क एवं कामकाजी बच्चों के पुर्नउत्थान के लिए कार्यरत है। हमारा सपना एक ऐसे समाज और तंत्र का निर्माण करना है जहां बच्चों को जीने का, सुरक्षा का, विकास एवं भागीदारी का अधिकार सुरक्षित हो सके।

इस हेतु हम तीन स्तरों पर कार्यरत हैं-

☺ सीधे रूप से सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ सम्पर्क स्थापित कर एवं उनकी क्षमता वृद्धि, मुद्दों के प्रति समझ एवं समूह बनाकर

☺ बच्चों की जिन्दगी को प्रभावित करने वाले कारकों जैसे पुलिस, मीडिया, कारपोरेट, आम व्यक्ति आदि को संवेदनशील बनाकर।

☺ बाल मित्र नीतियों के निर्माण में सहयोग देकर

हम मानते हैं इस कार्य में आप हमारा सहयोग करेंगे एवं भारत को हमारे साथ मिलकर बाल-मित्र देश बनाएंगे।